Review Of Research
Vol. 3 | Issue. 9 | June. 2014
Impact Factor : 2.1002 (UIF)
ISSN:-2249-894X
Available online at www.ror.isrj.net

ORIGINAL ARTICLE

प्रयाग कुम्भ 2013 में लोकमाध्यमों द्वारा सामाजिक सरोकार

अमित मालवीय , सुमीत द्विवेदी

शोध छात्र, नेहरू ग्राम भारती विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश

सारांश :-

कुम्भ भारतीय संस्कृति के बहुरंगी अस्तित्व की एक जीवंत घटना है। हमारे देश की आध्यात्मिक, सामाजिक और वैचारिक विविधताओं का संगम भी इस आयोजन मे झलकता है। इस कारण इस आयोजन का महत्व पूरे विश्व के लिये एक आश्चर्य और उल्लास का विषय है। हमारे देश के पर्यटन सन्दर्भों में भी यह समागम एक महत्वपूर्ण आयोजन है। इस पौराणिक पर्व की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि बड़ी समृद्ध है। पुराणों से लेकर वर्तमान तक इस ऐतिहासिक एवं विशालतम पर्व से कई आध्यात्मिक एवं सामाजिक संदर्भ जुड़े हैं। जनश्रुति है कि सृष्टिकर्ता ब्रह्मा ने इस स्थान पर जीव-जगत के कल्याणार्थ कई यज्ञ किये थे। ज्योतिष शास्त्रों के अनुसार सूर्य और चंद्रमा जब मकर राशि मे संचरण करते हैं, तो प्रतिवर्ष माघ मेले का आयोजन होता है तथा जब बृहस्पति मेष राशि चक्र की वृषभ राशि मे 12 वर्ष मे आते हैं तब प्रयाग मे कुम्भ मेले का आयोजन होता है। इस विशिष्ट नक्षत्रीय स्थिति मे त्रिवेणी संगम पर अमरत्व की प्राप्ति होती है। [1]

प्रस्तावना :-

आस्था एवं ज्ञान के इस महान संगम को आदि शंकराचार्य ने ऐसा सुगठित रूप प्रदान किया जो पिछले हजार वर्षों से निरंतर इस देश को उत्तर से दक्षिण और पूरब से पश्चिम तक एक मजबूत एकता के सूत्र में पिरोये हुये है। हालांकि इस मेले के आरंभ की कोई प्रामाणिक जानकारी उपलब्ध नहीं है किंतु इसका जो प्राचीनतम लिखित वर्णन उपलब्ध है वह सम्राट हर्षवर्धन के काल में प्रसिद्ध चीनी यात्री ह्वेनसांग द्वारा किया गया है। सम्राट हर्षवर्धन आज भी इस मेले में जन कल्याण एवं अपनी दान शीलता के लिये याद किये जाते हैं। प्राचीन काल से आजतक इस स्थल पर होने वाला विद्वत संगम गंगा-यमुना के भौगोलिक संगम में सरस्वती(ज्ञान) की भी लाक्षणिक उपस्थिति को जोड़ता है। यह भारतीय जन-जीवन, संत-महात्माओं

Review Of Research
Vol. 3 | Issue. 9 | June. 2014
Impact Factor : 2.1002 (UIF)
ISSN:-2249-894X Available online at www.ror.isrj.net

के आध्यात्मिक चिंतन, जीवनदर्शन एवं प्राचीन संस्कृति का पुंजीभूत कुम्भ है, जिसकी मांगलिक विचारधारायें सुर सरिता के संगम द्वारा जन-जागृति और नवचेतना का शुभ संदेश देती आयी हैं।

कुम्भ और अर्द्धकुम्भ पर्व हमारे देश में दूर-दराज के पहाड़ी जंगली इलाकों गांवों तक धर्म और संस्कृति का संदेश पहुंचाने के सबसे बड़े माध्यम माने जाते हैं। मीडिया का यह स्वरूप तब विकसित हुआ था जब समाज मे अखबार, रेडिओ, टेलीवीजन, इंटरनेट पत्र पत्रिकाओं जैसे आधुनिक माध्यमों के बारे मे सोचा भी नहीं जा सकता था। शैव वैष्णव और हिंदूधर्म से जुड़े दूसरे संगठन इस पर्व का प्रयोग अपना सांस्कृतिक संदेश जनजन तक पहुंचाने के लिये करते थे।

इस परिपेक्ष्य मे देखा जाये तो प्रयाग कुंभ 2013 लोक माध्यमों द्वारा जनजन तक संदेश पहुंचाने का सर्वाधिक विस्तृत एवं सशक्त माध्यम स्थापित होता दिखता है। यह अपने पूर्ववर्ती संस्करणों के समान ही समकालीन सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक परिस्थितियों से प्रभावित एवं विसंगतियों के समाधान हेतु समाज की दिशा निर्धारण में अग्रसर हुआ। महाकुंभ में आये संत धर्म की अलख तो जगा ही रहे थे साथ ही कर्म, गंगा को प्रदूषण मुक्त रखने एवं सामाजिक विकास और समाज सुधार की बात भी कर रहे थे। गंगा से लेकर 'बेटी बचाओ' तक के आंदोलनों के जरिए यहां आए संत अपने संदेश मुखरता से प्रचारित भी कर रहे थे।[1]

देश और दुनिया से आये संतो ने मिलकर फैसला लिया कि धर्म के साथ-साथ कर्म की बाते भी होनी चाहिये। इसी क्रम मे अनेक सरकारी एवं गैर सरकारी सामाजिक संगठनो ने विश्व के इस सबसे बड़े मानव समागम का महत्व एवं प्रभावशीलता समझते हुये पूरी महाकुंभ अवधि के दौरान सामाजिक जनजागरूकता से जुडे अभियान बड़ी संख्या मे चलाये। इनमे विभिन्न लोक माध्यमो की महती भूमिका रही।

प्रवचन द्वारा जन जागरण -

प्रवचन मे संत महात्मा अपने भक्तों, समर्थकों एवं अनुयायियों को सत्कर्म का संदेश दिया करते हैं। यूं तो गंगा की निर्मलता और अविरलता को लेकर कुंभ में हमेशा चिंता व्यक्त की जाती रही है लेकिन संभवत: पहली बार उत्तरप्रदेश के इलाहाबाद में गंगा-यमुना और अदृश्य सरस्वती के संगम पर चल रहे महाकुंभ-2013 में पर्यावरण और बेटी बचाओ, महिला सशक्तिकरण तथा प्रदूषणमुक्त भारत के लिए संतों की ओर से अभियान चलाया गया। राजस्थान के शनिधाम ट्रस्ट के महामंडलेश्वर परमहंस दाती महाराज ने कन्या भ्रूण हत्या रोकने तथा बेटी बचाओ के नारे को अपने आश्रम से बुलंद किया। उन्होंने कहा कि कल्पना कीजिए बेटियां नहीं होगी तो यह समाज कैसा होगा? क्या बिना कन्या के किसी परिवार की कल्पना की जा सकती है। इलाहाबाद बार एसोसिएशन ने भी दाती महाराज के इस कदम को स्वागत योग्य बताते हुए उनके इस काम को सराहा। जगदगुरू स्वामी महेशाश्रम के आश्रम में हर हर महादेव तथा जय श्रीराम के साथ बेटियों को बचाने के नारे भी गूंजते दिखे। प्रतिदिन उनका प्रवचन होता था जिसमें धर्म की बातों के अलावा बेटियों की रक्षा करने की भी बात होती थी। कुंभ के अपने संपूर्ण प्रवचनो के दौरान स्वामीजी देश में लड़कियों की लगातार घट रही संख्या पर वह चिंतित नजर आये। उन्होंने कहा कि कानून बनाकर कन्या भ्रूण हत्या को नहीं रोका जा सकता। इसके लिए लोगों को यह संदेश देना होगा कि देश और समाज के

Review Of Research
Vol. 3 | Issue. 9 | June. 2014
Impact Factor : 2.1002 (UIF)
ISSN:-2249-894X Available online at www.ror.isrj.net

लिए बेटियां कितनी जरूरी है। आने वाले पुरुष श्रद्धालुओं से वह सवाल भी उठाते रहे कि यदि बेटियां नहीं होगी तो अपने लड़कों की शादी किसी जानवर से तो नहीं करोगे ना...। [2]

गोवर्धनपुरी पीठाधीश्वर जगद्गुरू शंकराचार्य स्वामी निश्चलानन्द सरस्वती ने दिल्ली गैगरेप जैसी घटना को दुभाग्र्यपूर्ण एवं निन्दनीय बताया। उन्होंने कहा कि देश के अनेक संचार माध्यमों में जिस तरह से अश्लीलता को बढ़ावा दिया जा रहा है, उसने ऐसी घटनाओं के जन्म दिया है। ऐसी प्रवृत्ति पर अंकुश लागने के लिए जहां हमे अपने सांस्कृतिक मूल्यों को पहचानते हुए उन पर अमल करना होगा, वहीं इसे रोकने के लिए सरकार की ओर से कठोर कानून बनाए जाने की जरूरत है। गंगा मुद्दे पर उन्होने कहा कि गंगा पर काम से ज्यादा व्यक्तित्व को लक्ष्य बनाया जा रहा है। निर्मल गंगा के लिए व्यक्तित्व से ज्यादा काम को प्रमुखता दी जानी चाहिए। इसी तरह राम मुद्दे का भी समाधान संभव है लेकिन इसके लिए राजनीति से हटकर सही नीयत से काम करना होगा। दुर्भाग्य से राम मंदिर मुद्दे से जुड़े लोग शासन की नीतियों के तहत काम कर रहे है। [3]

गणतंत्र दिवस की पूर्व संध्या पर धर्म-आध्यात्म से इतर संगम की रेती गवाह बनी एक खास संकल्प की। संतों ने बेटियों को गणतंत्र के विकास की धुरी बनाने का संकल्प लिया। रेती पर जुटे संतों ने संकल्प लिया कि वे न सिर्फ बेटियों की रक्षा करेंगे बल्कि उन्हें आगे बढने में भी मदद करेगें। यह भी कि अगले चरण में प्रत्येक प्रवचन के दौरान भक्तों, श्रद्धालुओं से बेटी को बेटों की तरह ही परिवार, शिक्षा और सह भागिता में सम्मान देने का संकल्प दिलाया जायेगा।

बाघम्बरी गददी के महन्त नरेन्द्र गिरि ने कहा कि मठ बेटियों के संरक्षण का अभियान चलायेगा, वेद पाठियों की तरह ही अलग-अलग स्कूलों में जरूरतमंद बेटियों की पढाई का खर्चा उठाया जायेगा। निंरजनी अखाडे के श्री महंत रवीन्द्र पुरी ने कहा कि बेटियों का संरक्षण अखाडे का संकल्प है। अग्नि अखाडे के सचिव श्री महंत कैलाशानन्द ब्रहमचारी ने संकल्प लिया कि बेटी संरक्षण आज से शिविर का मूल होगा। स्वामी अविमुक्तेश्वरानन्द ने कहा कि, पीठ की ओर से बेटियों के संरक्षण अभियान के लिए अलग प्रकोष्ठ बनाया जायेगा। महन्त देवेन्द्र सिंह शास्त्री ने कहा कि अखाड़े की ओर से जरूरतमंद बेटियों की शिक्षा, विवाह का खर्च उठाया जायेगा। [4]

ब्रहमकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय ने महिला सशक्तीकरण का मुद्दा उठाया । विश्वविद्यालय से जुड़ी दो हजार से ज्यादा महिलाओं ने संकल्प लिया कि वे महाकुंभ से जाने के बाद महिला सशक्तिकरण के लिए काम करेंगी। इसी क्रम मे सतुआ बाबा पीठ के महामंडलेश्वर बाबा संतोष दास ने पर्यावरण संरक्षण का मुद्दा उठाया। उन्होंने वायु स्नान को भी महत्वपूर्ण माना और कहा कि यदि वायु प्रदूषित हुई तो देह भी प्रदूषित होगी तथा कुछ भी सही नहीं होगा। वह अपने आश्रम में आने वाले लोगों को कम से कम एक पौधा लगाने की सीख भी देते रहे। बाबा संतोष दास ने अपने प्रवचनों में बताया कि पेड़ो से ऑक्सीजन मिलता है, जो किसी के भी जीने के लिए सबसे जरूरी है। बाबा ने कहा कि जल और वायु तेजी से प्रदूषित हो रही है। शहर ही नहीं गांवो में भी कंक्रीट के जंगल बढ़ते जा रहे है। लोग पेड़ों को काट कर मकान बना रहे है। मकान किसी को रहने के लिए छत तो दे सकते है लेकिन जिंदा रहने के लिए शुद्ध वायु जरूरी है। पंच अग्नि अखाडा के महामंडलेश्वर कैलाशानंद तथा उनसे जुड़े लोगों ने प्रवचन द्वारा अविरल और निर्मल गंगा का संदेश दिया। उन्होने कहा कि गंगा जीवनदायिनी है, यह अपने किनारे बसे शहरों के पांच करोड़ लोगों का पेट पालती हैं। गंगा को लोग अपने स्वार्थ के लिए लगातार प्रदूषित करते जा रहे हैं, अब तो इसका जल आचमन के लायक भी नहीं रह गया है। पंच अग्नि अखाडा से जुड़े संतों ने कहा अब बहुत हुआ, गंगा को

तो बचाना ही होगा अन्यथा अनर्थ होगा। देश के राजनीतिज्ञों को गंगा की चिंता नहीं है, वे शहरीकरण को बढ़ावा देना ही विकास का पैमाना मान रहे हैं। निर्वाणी अखाड़ा से जनसंख्या पर नियंत्रण तथा गाय और गंगा को बचाने का संदेश दिया गया। अखाड़े से जुड़े स्वामी प्रेमानंद का कहना था कि जनसंख्या में लगातार हो रही वृद्धि ने सामाजिक संतुलन को बिगाड़ दिया है। सरकार के साथ लोगों को भी सोचना होगा कि कम जनसंख्या तेजी से विकास करती है। दुनिया में कम जनसंख्या वाले देश इसका गवाह है। उन्होने अपने प्रवचनों के दौरान यह भी कहा कि जनसंख्या कम होगी तो समाज भी सुशिक्षित होगा। वह पॉलीथीन तथा प्लास्टिक से भी बचने की सलाह लोगों को देते रहे। पॉलीथीन और प्लास्टिक प्रदूषण बढ़ा रहे है जिसके परिणाम घातक होने वाले है। [5]

परिचर्चा, सम्मेलन, गोष्ठियों द्वारा जन जागरण -

महाराष्ट्र से आये पूर्व आई. ए. एस. अधिकारी श्री अविनाश धर्माधिकारी ने प्रयाग कुम्भ मेला क्षेत्र के परेड ग्राऊंड स्थित गंगा व यमुना जल निवारण प्रदर्शनी, प्रकृति संरक्षण शोध प्रसार, पर्यावरण जनजागरण महाभियान के प्रांगण मे आयोजित गोष्ठी में कहा कि गंगा हमारी मां है और हम सबको मिलकर गंगा को प्रदूषण मुक्त बनाने का प्रयास करना चाहिए। गंगा से ही भारत की संस्कृति पल्लवित और पुष्पित हुई है। उन्होने आगे कहा कि वर्तमान परिस्थिति में जलाभाव के कारण गंगा जल में प्रदूषण की मात्रा बढ़ती जा रही है। इस बढ़ते प्रदूषण के अनेक कारण दृष्टिगत हैं। नेहरू युवा केन्द्र संगठन नई दिल्ली के पूर्व निदेशक विक्रमधीश ने कहा कि गंगा और यमुना जल में प्रदूषण की मात्रा बढ़ती जा रही है। जिसके कारण देवनदी का भौतिक स्वरूप संकट में आ गया है। हम सब को मिलकर आगे आना होगा। तभी जाकर गंगा को प्रदूषण मुक्त किया जा सकता है। यह कार्य केवल सरकारी तंत्र के बस की बात नहीं है। सामाजिक कार्यकर्ता अरविन्द सिंह कुशवाहा ने कहा कि करोड़ों करोड़ों भारतीयों की आस्था गंगा के प्रति आदिकाल से लेकर आज तक बनी हुई है। क्योंकि जब हम गंगा को अपनी मां के रूप में देखते हैं तो वह उनके अपने गुणों के आधार पर मानते हैं। नेहरू युवा केन्द्र संगठन के तत्कालीन निदेशक डॉ. चन्द्रशेखर प्राण ने कहा कि तमाम विसंगतियों के बावजूद भी प्रो. दीनानाथ शुक्ल 'दीन' 34 वर्षों से अपने परिवारीजनों के साथ यहां जनजागरण का अतुलनीय प्रयास करते आ रहे हैं। प्रदर्शनी के निदेशक, व्यवस्थापक एवं इलाहाबाद विश्वविद्यालय के वनस्पति विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. दीनानाथ शुक्ल 'दीन' ने कहा कि गंगा के मुख्य स्वरूप को बांधों से जकड़ लिया गया है। जिससे उनकी मूल धारा श्रद्धालुओं तक नहीं पहुंच पा रही है। [6]

परमार्थ निकेतन आश्रम शिविर में चलाये गये डिवाइन भक्ति फेस्टिवल में 'महिला जागरूकता' विषय पर साध्वी भगवती सरस्वती ने कहा कि महिलाओं को जगाने की आवश्यकता है। उन्हें अपनी वास्तविक शक्ति को पहचानना चाहिए, क्योकि महिलाएं समाज की इच्छानुसार कार्य करती है। महाकुंभ मेले में प्रजापति ब्रहमाकुमारी ईवश्रीय विश्वविद्यालय के राजयोग शिक्षा एवं शोध संस्थान के ग्राम्य विकास विभाग की ओर से उत्पादन बढ़ाने के लिए राजयोग एवं जैविक खाद का प्रयोग विषय पर परिचर्चा की गई। मेले में इलाहाबाद विश्वविद्यालय की NSS इकाई के गुलाटी मार्ग शिविर में गंगा प्रदूषण नियंत्रण को लेकर गोष्ठी का आयोजन हुआ। [7] महाकुंभ नगर के सेक्टर 13 स्थित गायत्री आत्मोत्थान मण्डल के शिविर में

Review Of Research
Vol. 3 | Issue. 9 | June. 2014
Impact Factor : 2.1002 (UIF)
ISSN:-2249-894X Available online at www.ror.isrj.net

सर्वधर्म समभाव संत सम्मेलन आयोजित किया गया। मुख्य अतिथि ऋषि प्रभाकर ने कहा कि सभी धर्मों का उद्देश्य प्राणी मात्र का कल्याण एवं मानव का सुखी होना है। दान, धर्म, सेवा को छोडकर सभी पैसे के पीछे भागने लगे हैं। कारण यह है कि हम गुरूकुल और गुरू को भूल गए हैं। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण द्वारा संगम पहुंचे स्नानार्थियों को उनके विधिक अधिकारो के बारे में जागरूक करते हेतु विशेष विधिक साक्षरता शिविर का आयोजन किया गया। शिविर की अध्यक्षता जिला जज श्री विजय पाल ने की। [8]

राष्ट्रीय सेवा योजना के छात्रों ने छोटी नदियां बचाओ अभियान में देश-विदेश से आये कलाकारों की कलाकृतियों को देखने में विशेष रुचि दिखायी। वसुधैव कुटुम्बकम के निदेशक ए.के. डगलस और छोटी नदियां बचाओ अभियान के संयोजक मोनिका आर्या के नेतृत्व में कुंभनगर में कलात्मक अभिव्यक्तियों के माध्यम से जागरुकता अभियान का सूत्रपात किया गया। मोनिका आर्या ने कहा कि चित्रकारों और कलाकारों से जन-जन को उचित मार्गदर्शन प्राप्त हो सकता है। उन्होंने छोटी नदियां बचाओ के इस मंच की आवश्यकता को बताते हुए स्थानीय जनप्रतिनिधियों का आह्वान किया। उन्होंने प्रयाग की धरती पर संगठित होकर जन सरोकारों के संदर्भ में राज्य के साथ सीधे विमर्श का कार्यक्रम भी आरंभ किया। मुंबई के फिल्मकार पंकज मिस्त्री के बाद दिल्ली से रोहित सूरी ने छोटी नदियां बचाओ कैम्प में शिरकत की। इस कार्यक्रम में इलाहाबाद से अन्ना आंदोलन से जुड़े कार्यकर्ताओं ने सरहनीय भूमिका निभाई। [9]

रैली, पदयात्रा द्वारा जन जागरण -

गंगा जमुनी तहज़ीब के सबसे बड़े नगर कुंभ नगर में एक "शांति का कारवाँ" देश के अलग अलग जगहों से होता हुआ पहुंचा। अफ़राद-ए-कारवाँ कुम्भ में साधू संतों से मिला, हिन्दू आदमी औरतों से मिला, उनके कैम्प में ठहरा और हिन्दू-मुस्लिम एकता के विषय पर विचार-विमर्श भी किया। भारत को समृद्धिशाली और एकजुट रखने वाली इस मिसाली कारवाँ-ए-अमन का कुम्भ मिलाप देखने योग्य था। कारवाँ को अपने बीच पाकर साधू-संत आश्चर्य चकित हो गए, कदाचित प्रथम दृश्य में उन्हें विश्वास ही नहीं हुआ, लेकिन वे मुसलमानों के इस कार्य से बेहद प्रभावित हुए। 29 मार्च 2010 की सुबह अफ़राद-ए-कारवाँ-ए-अमन (शांति कारवाँ के सदस्य) इलाहाबाद में अहले-सुबह (प्रातः काल) ही पहुँच गया था। पहुँचते ही साध्वी गीता और शिव कुमार झा जी की अगुआई में उनका स्वागत किया गया। भारत की गौरव गंगा नदी के तट पर स्थित माँ श्री प्रज्ञा (गंगा बचाओ मिशन वाली) के टेंट में शान्ति के सिपाहियों का मक़ाम ठहरा। एक घंटे के आराम के बाद कारवाँ के अफ़राद शांति का पैगाम फ़ैलाने और लोगों से मिलने बाहर निकल पड़े। आगे वे एक समूह से मिले जहाँ वे प्रो. वी.के त्रिपाठी (दिल्ली) द्वारा रचित हिन्दू-मुस्लिम यूनिटी, हक-और बातिल (सच और झूठ) और शांति पथ आदि पुस्तकों का वितरण किया। यहाँ पर कारवां ने भारत के ज्वलंत मुद्दों पर भी बातचीत की। कारवां में दिल्ली से फैसल खान, बिहार से सुरेश जी, गुजरात से एम् एच गाँधी और जम्मू कश्मीर से सज्जाद कारगिली शामिल थे। उन सभी ने मान प्रज्ञा को अथिति सत्कार के बेहतरीन इंतजाम के लिए धन्यवाद दिया। [10]

गणतन्त्र दिवस के मौके पर परमार्थ निकेतन के शिविर से पर्यावरण रैली निकाली गई, इसमें 45 देशों के लोगो ने हिस्सा लिया। स्वामी चिदानन्द सरस्वती के नेतृत्व में पीली साडी, लाल ब्लाउज में सजी विदेशी महिलाएं सिर पर कलश लेकर निकलीं। सेना, पुलिस और पीएसी की बैड धुनो के बीच गंगा-यमुना

Review Of Research
Vol. 3 | Issue. 9 | June. 2014
Impact Factor : 2.1002 (UIF)
ISSN:-2249-894X Available online at www.ror.isrj.net

के तट पर गंगा सेवा और पर्यावरण सेवा का संदेश दिया गया। दोपहर 3.30 पर संगम पहुंची रैली की प्रशासनिक अफसरों ने आगवानी की। शहीदों की याद में वृक्षारोपण भी किया गया। स्वामी चिदानन्द ने पर्यावरण सुरक्षा का संदेश दिया। [11]

गंगा की रक्षा के साथ साथ जिस मुद्दे पर सबसे ज्यादा बल संतो ने दिया वह था पर्यावरण संरक्षण। कुंभ में आस्था के साथ सामाजिक सरोकार की भी गंगा बह रही थी, जहां साधु-संत इसे ग्रीन कुंभ का दर्जा दिलाने में जुटे हुए थे। इस आंदोलन का सबसे बड़ा केंद्र रहा अरैल घाट पर स्थित परमार्थ निकेतन। जिसके अगुवा चिदानंद मुनि ने पूरे कुंभ के दौरान गंगा और पर्यावरण को लेकर झंडा बुलंद किए रखा। ग्रीन कुम्भ के संकल्प में शामिल होने के लिए उत्तर प्रदेश के राज्यपाल बी.एल जोशी सहित उ0प्र0 के लोक निर्माण ,सिचाई मंत्री शिवपाल यादव भी आए थे। 'हरित कुम्भ' का संकल्प लेने वाले बाबा के विदेशी भक्तों ने पर्यावरण प्रेम को ज्यादा से ज्यादा लोगों तक पहुंचाने के लिए अपने आप को एक हरे पेड़ के रूप में सजाया और फिर पूरे मेले क्षेत्र में घूम घूमकर लोगों को हरित कुम्भ के संकल्प को दोहराया [12]

यमुना का जल स्वच्छ व निर्मल रहे इसके लिए मेलाक्षेत्र मे तुलसी मार्ग पर स्थित शान्ति सेवा शिविर से देवकी नन्दन ठाकुर जी महाराज एवं बाघम्बरी गद्दी के आनन्द गिरी के नेतृत्व में शान्ति पद यात्रा संगम तक निकाली गयी और पूरी भव्यता से गंगा पूजन किया गया। इस दौरान उपस्थित भक्तों ने यमुना को स्वच्छ रखने का संकल्प भी लिया। इस दौरान श्री ठाकुरजी महाराज ने कहा कि हमें पहले यमुना पर ध्यान देना होगा क्योंकि यमुनाजी अपने उद्गम स्थल से लेकर गंगासागर तक यमुना कई स्थानों पर विलुप्त सी नजर आती हैं। वहां सीवर, कारखानों का केमिकलयुक्त पानी, पशु रक्त आदि मिलकर इसके अस्तित्व का भ्रम कराते हैं। कहा कि हथनिकुण्ड पर बांध बनाकर यमुना के पानी को रोककर उसका दोहन किया जाता है, उसके आगे सूखी यमुना में गंदे नालों के जरिये गंदा पानी मिला दिया जाता है और यही पानी मथुरा-वृन्दावन पहुंचता है। कहा कि इतनी दयनीय स्थिति होने के बावजूद यमुना की अविरलता व स्वच्छता बनाये रखने के लिए केन्द्र व राज्य सरकार द्वारा कोई ठोस कार्यवाही नहीं की जा रही है। इस समस्या से राष्ट्रपति व प्रधानमंत्री को अवगत कराया जायेगा। आनन्द गिरि ने कहा कि भारत में जनता को भी इस मामले पर जागरूक होना होगा, तभी कुछ हो सकता है। यदि सरकारें कुछ नहीं करती तो हम लोगों को स्वतः अपनी मां गंगा-यमुना के अस्तित्व को बचाने के लिए कुछ न कुछ करना पड़ेगा। [13]

मंचन द्वारा जन जागरण -

प्रयाग महाकुम्भ 2013 में संस्कृति विभाग उत्तर प्रदेश एवं उत्तर मध्य सांस्कृतिक केन्द्र इलाहाबाद के तत्वावधान में आयोजित चलो मन गंगा जमुना तीर के तहत अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रमों का मंचन किया गया जिसमें विभिन्न लोक कलांओं के माध्यम से लोक कलाकारों ने अनेक सामाजिक एवं राष्ट्रीय मुद्दो पर जनजागरण का आहवाहन किया। मंच से पूरे माह लोक गीतों, लोक नृत्यों भजन, कव्वाली, रामलीला, महारास, नौटंकी, कठपुतली नृत्य, जनजतीय नृत्यों, शास्त्रीय नृत्य एवं गीतों, लोक नाट्य द्वारा राष्ट्रभक्ति, सदाचार एवं नैतिकता का सन्देश दिया गया। साथ ही अनेक सामाजिक कुरीतियों पर प्रहार करते हुए भ्रष्टाचार कालाधन कन्या भ्रूण हत्या, गंगा प्रदूषण, गौ हत्या जैसे मुद्दों पर देश के हर एक नागरिक विशेषकर युवा पीढी को आगे आने का आहवाहन भी किया गया। [14]

मेले के दौरान कार्ष्णि शिविर में आयोजित रामलीला, रासलीला के मंचन शिविर में आये सन्त महात्माओं ने श्रद्धालुओं से राष्ट्रहित में कार्य करने का आहवाहन किया। साथ ही यह भी आहवाहन किया कि परिवार के बडे बुजुर्ग अपनी आने वाली पीढीयों को नैतिक शिक्षा अवश्य दें ताकि वे आगे चलकर वास्तविक रूप से एक सशक्त एवं देशभक्त नागरिक बन सकें। मेले में श्री मारूति धाम शिविर में कौशाम्बी से आये जय माँ सिंह वाहिनी आदर्श रामलीला मंडल ने रामलीला के माध्यम से लोगों से मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम के आदर्शो पर चलने का आहवाहन किया। वृन्दावन मथुरा से आये संत श्री रसिया बाबा के शिविर में रासलीला का मंचन किया गया जिसके दौरान विभिन्न सामाजिक विषयों की चर्चा करते हुए कृष्ण के यमुना के प्रति प्रेम का सन्दर्भ लेते हुए नदियों के सरंक्षण की प्रेरणा दी गयी।

अन्य लोक माध्यमों द्वारा जन जागरण -

वाराणसी हिन्दू विश्वविद्यालय के पर्यावरण विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो. बी.डी त्रिपाठी ने गंगा व यमुना जल निवारण प्रदर्शनी, प्रकृति संरक्षण, शोध प्रसार पर्यावरण जनजागरण अभियान के प्रांगण में आयोजित एक संगोष्ठी में वायु, जल एवं मृदा प्रदूषण पर ध्यानाकर्षण किया। इस दौरान प्रदर्शनी परिसर में गंगा-यमुना के प्रदूषण पर चित्रकला प्रतियोगिता एवं निबंध प्रतियोगिता सम्पन्न हुई, जिसमें तमाम बच्चों को सम्मानित किया गया।

कुंभ नगरी धार्मिक, सामाजिक उत्थान, मनीषियों के विचारों, ज्ञान मीमांसा आदि पर प्रकाशित विभिन्न पुस्तकों के लिए भी जाना जायेगा। संगम की रेती पर इन दिनों बहुभाषी अखबारों, प्राचीन किताबो से लेकर बाल साहित्य धर्म से लेकर आस्था तक की दुर्लभ पुस्तके वाचनालय में पढ़ने को मिली। कुंभ मेले के सेक्टर नंबर चार में त्रिवेणी मार्ग पर वाचनालय प्राचीनतम अखाड़ों में से एक पंचायती अखाड़ा द्वारा संचालित किये गये थे। यहां पर हर वर्ग के लोगों के लिए पुस्तके उपलब्ध रहीं। यहां धर्म और ज्ञान से संबधित पुस्तकें भी खूब बिकी। वेद, पुराण, संहिताये, उपनिषद, महाकाव्य, रामायण और महाभारत, गीता, स्मृतियाँ, बौद्ध एवं जैन साहित्य के साथ-साथ चाणक्य नीति, विश्वविख्यात रामकथा, साथ ही साथ देष के वीरों, वीरांगनाओं की कहानियों को बयान करती पुस्तके भी यहाँ मौजूद रहीं। इसी के साथ-साथ आल्ह खण्ड, बाल हंस, नंदन, नागराज की दुनिया, तेनाली राम की दुनिया, इंद्रजाल, कबीर बीजक, सिंहासन बत्तीसी, तोता मैना, किस्सा हातिमताई, चर्पट मंजरी, अताउल्ला खां, पारख मूल, जादूगरी शिक्षा, ज्योतिष विद्या, भक्त माल, शिव चरित्र, रक्तिमणि मण्डला जैसी पुरानी और महत्वपूर्ण पुस्तकें भी लोगों के ज्ञान में बढोत्तरी कर मेले को और ज्ञानवर्धक बनाती रहीं।

रेत की नगरी में बनी लाइब्रेरी के साथ-साथ विभिन्न स्थलों पर लगी पुस्तकों की दुकानें इस बात को साफ तौर पर दर्शा रही थी कि इंसान की सबसे अच्छी मित्र उसकी पुस्तकें ही होती हैं। जो उसके अकेलेपन में भी उसकी साथ देती हैं और मनोरंजन के साथ ज्ञान में तो बढोत्तरी भी करती हैं। पुस्तकें ही हमें ऋषियों और ज्ञानियों से मिलने का अवसर प्रदान करती हैं। कुंभ मेले में धार्मिक और प्राचीन भारत के साहित्य का भी खूब प्रचार-प्रसार हुआ। [15]

निष्कर्ष -

अत: समग्र रूप से यह कहा जा सकता है कि प्रत्येक १२ वर्ष में आयोजित होने वाले कुम्भ व अद्धकुम्भ मेले लोक माध्यमों द्वारा जन-जन तक संचार के सर्वाधिक वृहद एवं सशक्त माध्यम हैं, जिनमें देश-विदेश के विभिन्न सामाजिक, सास्कृतिक, आर्थिक, राजनैतिक विषयों पर न सिर्फ चर्चा होती है, वरन प्रवचन, परिचर्चा, सम्मेलन, गोष्ठी, रैली, पदयात्रा, मंचन (रासलीला, रामलीला, लोकनृत्य, लोकनाट्य, लोक गायन, लोक वादन, कठपुतली आदि), संगोष्ठी, वाचनालय द्वारा इन विषयों का समाधान वृहद विष्लेषण द्वारा निकालकर जन-जागरण का अमूल्य प्रयास किया जाता है। इस दृष्टि से देखा जाए तो प्रयाग कुम्भ 2013 अपना विशिष्ट स्थान रखता है। सम्भवतः पहली बार उत्तरप्रदेश के इलाहाबाद में गंगा-यमुना और अदृश्य सरस्वती के संगम पर हुए इस महाकुम्भ में पर्यावरण और बेटी बचाओ, महिला सशक्तीकरण तथा प्रदूषण मुक्त भारत सहित गरीबों की पुत्रियों के विवाह करने के लिए संतों की और से अभियान चलाया गया। कोई संत विकलांगों के विकास की बात कर रहा था, कोई गो वंश की रक्षा का सन्देश दे रहा था तो कोई देश के लिए अपने प्राण न्योछावर करने वाले शहीदों की याद में अखंड यज्ञ कर रहा था। इस महाकुम्भ में भगवान् के नाम के साथ-साथ कर्म और सामाजिक दायित्व के निर्वहन की प्रेरणा देने वाले कर्मयोगियों का भी बोलबाला रहा। इस विराट आयोजन के दौरान सामाजिक जन-जागरूकता से जुडे विभिन्न प्रसंगिक मुद्दों को समझाने एवं उनके समाधानों की ओर आम जन-मानस को प्रेरित करने में लोक माध्यमों का विशेष योगदान रहा।

सन्दर्भ-

1. कुम्भ दर्शन-2013, सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश, लखनऊ द्वारा प्रकाशित पत्रिका।
2. वेब दुनिया डाट काम (www.webdunia.com)।
3. अमर उजाला दैनिक, इलाहाबाद परिशिष्ट, वर्ष 16, अंक 225, दिनांक 30.01.2013. पृष्ठ 7।
4. अमर उजाला दैनिक, इलाहाबाद परिशिष्ट, वर्ष 16, अंक 222, दिनांक 26.01.2013. पृष्ठ 16।
5. वेब दुनिया डाट काम (www.webdunia.com)।
6. हिन्दुस्तान समाचार न्यूज एजेन्सी, विद्याकान्त/राजेश, दिनांक 04.03.2013।
7. अमर उजाला दैनिक, इलाहाबाद परिशिष्ट, वर्ष 16, अंक 225, दिनांक 30.01.2013, पृष्ठ 6-7।
8. अमर उजाला दैनिक, इलाहाबाद परिशिष्ट, वर्ष 16, अंक 223, दिनांक 28.01.2013, पृष्ठ 6।
9. हिन्दुस्तान समाचार न्यूज एजेन्सी, विद्याकान्त/राजेश, दिनांक 28.02.2013।
10. http://swachchhsandesh.blogspot.in
11. अमर उजाला दैनिक, इलाहाबाद परिशिष्ट, वर्ष 16, अंक 224, दिनांक 29.02.2013।
12. हिन्दुस्तान समाचार न्यूज एजेन्सी, विद्याकान्त/राजेश,दिनांक 02.03.2013।
13. हिन्दुस्तान समाचार न्यूज एजेन्सी, विद्याकान्त/राजेश,दिनांक 01.03.2013।
14. NCZCC booklet.
15. हिन्दुस्तान समाचार न्यूज एजेन्सी, विद्याकान्त/राजेश,दिनांक 07.03.2013।